PRESS INFORMATION BUREAU
पत्र सूचना कार्यालय
GOVERNMENT OF INDIA
भारत सरकार

Nai Dunia, New Delhi
Wednesday 6th August 2014, Page: 7
Width: 27.01 cms, Height: 15.91 cms, a4r, Ref: pmin.2014-08-06.39.88

जेनरिक दवाएं v/s ब्रांडेड दवाएं

विशेषज्ञों का मतः दवाओं के असर की जानकारी नहीं होने से लोगों को है गलतफहमी

सिर्फ रैपर का फर्क, क्वालिटी वही

भोपाल (ब्यूरो, मप्र)। अगर आपको यह लगता है कि ब्रांडेड दवाएं ज्यादा फायदा करती हैं और जेनरिक कम असरकारक होती हैं, तो यह आपकी गलतफहमी है। जेनरिक और ब्रांडेड दवाओं में सिर्फ नाम का फर्क है क्वालिटी का नहीं। नेशनल एक्रीडेशन बोर्ड फॉर लेबोरेट्री (एनएबीएल) अप्रूव्ड लैब से जेनरिक दवाएं क्वालिटी में खरी उतरी हैं। इतना ही नहीं एम्स के पास खोले गए एक दवा स्टोर पर ब्रांडेड के मुकाबले जेनरिक दवाएं 20 गुना तक सस्ती मिल रही हैं।

केन्द्र और राज्य सरकारें भी जेनरिक दवाएं आमजन को खिला रही हैं। केन्द्र सराकर के औषधि निर्माण विभाग द्वारा जगह-जगह जन औषधि केन्द्र खोले जा रहे हैं। एनएबीएल लैब से जांच में खरी उतरने वाली दवाओं की सप्लाई ही इन स्टोर्स पर की जा रही है। इसके अलावा मध्यप्रदेश में निःशुल्क दवा वितरण योजना के तहत जेनरिक दवाओं की सप्लाई की जा रही है। प्रदेश के सभी अस्पतालों में मिलाकर चार से पांच लाख लोगों को रोज जेनरिक दवाएं दी जा रही हैं।

दवाओं की कीमत प्रति 10 टेबलेट (रुपए में)

दवा का नाम	ब्रांडेड	जेनरिक
डाइक्लोफेनेक 100 एमजी	39.73	4.43
पेरासिटामाल 500 एमजी	18.84	5.60
ट्रामाडोल 50 एमजी	78	3.49
अमोक्सीसिलिन 500 एमजी	65.45	37
रेबीप्रोजोल 20एमजी	57.84	6.12
सिट्रीजिन 10 एमजी	30	03
एनालप्रिल 5 एमजी	31	07
एटोरवास्टिन 20 एमजी	175	10
अलवेंडाजोल 400 एमजी	132	20
डोमपेरिडान 10 एमजी	25	03
सिप्रोफ्लाक्सासिन 250 एमजी	47	16
निमेसुलाइड 100 एमजी	33	03
एजिथ्रोमाइसिन 500 एमजी	265	105
लोसार्टन 50 एमजी	67	07

ब्रांडेड की इसलिए ज्यादा है कीमत

केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के औषधि निर्माण विभाग के अधिकारियों ने बताया कि दवा कंपनियां अपने ब्रांड नाम के विज्ञापन पर ज्यादा पैसा खर्च करती है। इन दवाओं पर टैक्स भी ज्यादा होता है। इस कारण कीमत ज्यादा होती है। इन दवाओं के प्रमोशन के लिए एमआर नियुक्त किए जाते हैं।

कीमत 20 गुना तक कम

ब्यूरो ऑफ पब्लिक सेक्टर अंडरटेकिंग ऑफ इंडिया (बीपीपीआई) के जीएम पीके सांत्रा ने बताया कि जेनरिक और ब्रांडेड दवा में सिर्फ नाम का फर्क होता है। दोनों दवाओं की गुणवत्ता एक जैसी होती है। इसकी वजह यह कि दोनों तरह की दवाओं में एक ही तरह का कच्चा मटेरियल उपयोग किया जाता है। दवाओं की गुणवत्ता की जांच भी ब्रांडेड दवाओं की तरह ही की जाती है। उन्होंने बताया कि रैपर, कलर और नाम जरूर ब्रांडेड दवाओं के अलग हो सकते हैं।

ब्रांडेड कंपनियां भी बनाती हैं जेनरिक दवाएं

फार्मासिस्ट अरुण आदित्य दुबे ने बताया के जेनरिक दवाओं को मतलब यह नहीं है कि स्थानीय स्तर पर बनाई जाती हैं। एक से एक ब्रांडेड कंपनियां भी जेनरिक दवाएं बनाती हैं। फर्क सिर्फ इतना रहता है कि जेनरिक दवा में कंपनी का नाम रहता है, लेकिन दवा का कोई नाम नहीं दिया जाता है।

जेनरिक की बढ़ी मांग

राजधानी में मेडिकल स्टोर संचालक और दवाओं पर रिसर्च कर रहे संदीप सिंह ने बताया कि दोनों तरह की दवाओं में ज्यादा फर्क नहीं है। जेनरिक दवाओं को लेकर लोगों में जागरूकता आई है। उन्होंने बताया कि हृदय रोग और अन्य गंभीर बीमारियों को छोड़कर डॉक्टर भी ब्रांडेड दवा नहीं लिख रहे हैं। ऐसे में मेडिकल स्टोर संचालकों को चाहिए कि वे मरीज को ब्रांडेड दवा न दें। उन्होंने कहा कि मरीज भी मेडिकल स्टोर संचालक से यह पूछ सकते हैं उसे ब्रांडेड दवा दी जा रही है या जेनरिक।

एक्सपर्ट व्यू

जेनरिक दवाएं सस्ती और असरकारक भी

विदिशा में सिविल सर्जन रहते हुए मैंने मल्टी नेशनल कंपनियों की जेनरिक दवाएं खरीदी थीं। ये दवाएं काफी सस्ती थीं और असर ब्रांडेड के बराबर ही था। ब्रांडेड दवा तभी उपयोग की जानी चाहिए, जब उनका जेनरिक वर्जन बाजार में नहीं हो। जिले के सरकारी अस्पतालों में करीब 30 हजार प्रसूताओं को हर साल जेनरिक दवाएं ही दी जाती हैं। इसके बाद इंफेक्शन रेट व मातृ मृत्यु दर निजी अस्पतालों से ज्यादा नहीं है। कुछ ब्रांडेड दवाएं पेटेंट होती हैं। ब्रांडेड दवा के प्रमोशन और रिसर्च पर काफी पैसा खर्च होता है, इसलिए वे महंगे दाम पर बाजार में बेची जाती हैं।

- डॉ. पंकज शुक्ला, सीएमएचओ, भोपाल

जेनरिक दवाओं के स्टोर खोलने का फैसला सराहनीय

जेनरिक और ब्रांडेड दवाओं में सिर्फ नाम का अंतर है। बीमारियों पर इनका असर एक समान होता है। मल्टी नेशनल दवा निर्माता कंपनियां ज्यादा कमाई के लालच में शुरू से ही जान-बूझकर जेनरिक दवाओं को लेकर भ्रांति फैला रही हैं। जबकि वे भी नाम बदलकर जेनरिक दवाएं ही बेच रही हैं। ये कंपनियां दवाओं के स्ट्रिप पर दवा की मूल कीमत का 70 से 80 गुना तक ज्यादा मूल्य अंकित रहता है। महंगाई के दौर में जेनरिक दवाओं से आम आदमी को काफी राहत मिलेगी। सरकार का जेनरिक दवाओं के स्टोर खोलने का फैसला सराहनीय है। मैं और मेरा परिवार पांच साल से जेनरिक दवाएं खा रहे हैं और इनका असर ब्रांडेड दवाओं की तरह ही है।

- डॉ. योगेश बलुआपुरी, वरिष्ठ हड्डी रोग विशेषज्ञ